શ્રી યશોવિજયજી
જૈન ગ્રંથમાળા
દાદાસાહેબ, ભાવનગર.
ફોન : ૦૨૭૮-૨૪૨૫૩૨૨
૩૦૦૪૮૪૬
1280

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१२
२७५

...ला—पुष्प १६वाँ

बीकानेर के दर्शनीय जैन मंदिर

लेखक
अगरचन्द नाहटा

प्रकाशक
दानमल शंकरदान नाहटा
नाहटों की गवाड़
बीकानेर

प्रथमावृत्ति १००० | सं० २०१२ वि० मूल्य –)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बीकानेर के दर्शनीय जैन-मंदिर

बीकानेर राजस्थान का एक प्रधान अंग है जो पहले एक अलग राज्य के रूप में था। सं० १५४५ में जोधपुर के राठोड़ वंशी राव जोधाजी के पुत्र राव बीकाजी ने इसे बसाया। इसके आस-पास का प्रदेश 'जांगल' के नाम से प्रसिद्ध था। क्रमशः राज्य सीमा बढ़ती गई और यहां के साहसी व्यापारियों की समृद्धि भी। राव बीकाजी के साथ ओसवाल जाति के कई व्यक्ति भी साथ आये थे और उनका राज्य के संचालन व व्यवस्था में बड़ा हाथ रहा। राव बीकाजी से महाराज रायसिंहजी तक सभी प्रधान मंत्री बच्छावत वंश के थे और पीछे भी सुराणों एवं वैदों आदि का राज्य की उन्नति में बड़ा हाथ रहा। इसलिए ओसवाल जाति के करीब ६० गोत्रों वाले डेढ़-दो हजार घर यहां रहे व हैं। मन्त्रीश्वर कर्मचंद वच्छावत ने जातियों और गोत्रों के अलग-अलग मोहल्ले स्थापित किये जिनमें ओसवालों की २७ गवाड़े याने मोहल्ले हैं। प्रत्येक गोत्र वाला प्रायः अपनी गवाड़ में ही रहता है। ऐसी सुन्दर व्यवस्था अन्यत्र शायद कहीं नहीं है।

बीकानेर राज्य यद्यपि जोधपुर आदि से छोटा था, पर यहां जैन ज्ञान भंडार और जैन मंदिर राजस्थान के अन्य सब नगरों से अधिक हैं। बीकानेर की यह विशेषता विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जैन मंदिरों की अधिकता और उनके महत्त्वपूर्ण होने के कारण बीकानेर की गणना जैन तीर्थों में की गई है। कविवर समयसुंदर ने अपनी तीर्थ माला में अन्य तीर्थ स्थानों के साथ बीकानेर का भी विशिष्ट स्मरण व वंदन किया है—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

'बीकानेर ज वंदीए, चिरनंदीये रे, अरिहंत देहरा आठ। तीर्थ ते नमुं रे'

कविवर समय सुन्दर के समय (सं० १६८०) यहां आठ जैन मंदिर थे, जो बढ़ते-बढ़ते अब अंतर्गत मन्दिरों को लेकर करीब ३५ की संख्या तक पहुँच गये हैं। समय-समय पर अनेक स्थानों के जैन यात्री बीकानेर को तीर्थ मानते हुए यात्रा के लियेयहां आते हैं। पर यहां के मन्दिरों की पूरी जानकारी न होने से पूरा दर्शन नहीं कर पाते व उन्हे बड़ी असुविधा होती है इसलिये यहां के मंदिरों का संक्षिप्त परिचय प्रकाशित करना आवश्यक जान यह लघु प्रयास किया जा रहा है।

गत १५-२० वर्षों से हमने यहां के ही नहीं, राज्य भर के मंदिरों की समस्त प्रतिमाओं के लेख और मंदिरों के इतिहास आदि के संबंधी विशेष अन्वेषण किया है। जिसके फल स्वरूप एक वृहद् सचित्र ग्रंथ 'बीकानेर जैन लेख संग्रह' के नाम से मुद्रित करवाया है, जो शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। पर जन साधारण के लिये तो सामान्य जानकारी ही अपेक्षित होती है, इसलिये इस छोटी सी पुस्तिका में यहां के जैन मंदिरों का अति संक्षिप्त परिचय प्रकाशित करना ही अभीष्ट है। इससे अधिक परिचय की जिज्ञासा होगी तो दूसरे संस्करण में कुछ फोटो सहित थोड़ा विस्तृत परिचय दिया जायगा।

रांगड़ी के चौक में जैन स्वधर्मीशाला है जो जैन यात्रियों के ठहरने का स्थान है। अतः वहां से जो जैन मंदिरों के दर्शनों के लिये जाने का सुविधाजनक मार्ग है उसी के क्रम से यहां मंदिरों का परिचय दिया जा रहा है।

१ चिन्तामणिजी (आदिनाथ चौवीसटा) का मंदिर

(कंदोईयों के बाजार के उत्तरी नुक्कड़ पर)

बीकानेर नगर की नींव पड़ने के साथ ही इस मंदिर की भी नींव डाली जाने का प्रवाद है। सं० १५६१ में राव बीकाजी के समय में इस मंदिर के बनने का

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इस मंदिर में शिलालेख लगा हुआ है। इसकी मूलनायक आदिनाथ मुख्य-चतुर्विंशति जिन की धातु मूर्ति, सं० १३८० में जिनकुशलसूरि द्वारा प्रतिष्ठित मंडोर से लाई गई थी। जैसलमेरी पीले पत्थर से यह सुंदर मंदिर बना हुआ है। इसके गर्भगृहों (गुंभारों) में से एक में १०५० धातु प्रतिमाएँ हैं जो सिरोही की लूट सं० १६३९ में मंत्रीश्वर कर्मचन्द के प्रयत्न से यहाँ प्राप्त हुई रखी हुई हैं। इनमें नौवीं-दशवीं शताब्दि से १६वीं शताब्दि तक की विविध कला पूर्ण धातु मूर्तियां हैं। इतनी अधिक धातु प्रतिमाओं का एकत्रीकरण अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगा। बीकानेर का यह सबसे पहला मंदिर होने के साथ साथ इतनी अधिक और प्राचीन प्रतिमाओं के संरक्षण केन्द्र होने की दृष्टि से भी इस मंदिर का बड़ा महत्त्व है। गुंभारे की ये प्रतिमाएं कई वर्षों के अनन्तर किसी खास दुर्भिक्ष व रोगोपशान्ति आदि के प्रसंग से निकाली जाती है। मूल मंदिर में एक कायोत्सर्ग की धातु प्रतिमा गुप्त काल की बड़ी सुंदर है और मूल मंदिर के दाहिनी ओर प्रदक्षिणा में सं० ११७६ का परिकर व अन्य धातु पट्ट आदि दर्शनीय हैं। बांई ओर शान्तिनाथ भगवान का स्वतंत्र मंदिर है। यह मूल मंदिर कंदोई बाजार के उत्तरी नुक्कड़ पर अवस्थित है। इसका प्रवेश द्वार छोटा होने पर भी कला-पूर्ण है। १३ गवाड़ का यह पंचायती मंदिर है।

२ वासुपूज्यजी का मंदिर

यह उपर्युक्त मन्दिर के पास की मथेरण गली में डागों के महावीरजी के पास ही है। मूलतः यह बच्छावतों का देरासर था। सं० १६३९ में सिरोही की लूट से प्राप्त प्रतिमाओं में से वासुपूज्य चतुर्विंशति धातु प्रतिमा को यहाँ मूलनायक के रूप में स्थापित किया गया था। दोनों ओर दो देहरियां हैं।

पास ही में सटा हुआ दिगंबर जैन मंदिर है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

३ महावीरजी मंदिर (डागों का)

यह उपर्युक्त मन्दिर के पास ही डागों की पोल के सामने है। मूलनायक महावीर स्वामी की प्रतिमा जैसलमेरी पाषाण की है और पास की एक देहरी में सं० ११७६ की जांगलकूप से आई हुई सुंदर और सपरिकर प्रतिमा है।

४ भांडासरजी सुमतिनाथजी का मंदिर

यह मंदिर श्री लक्ष्मीनाथजी के मंदिर और गौशाला के पास की ऊँची भूमि पर अवस्थित है। त्रिभूमिया (तितल्ला), बड़ा विशाल और कला पूर्ण होने से सारे बीकानेर राज्य में यह जिनालय सबसे महत्त्वपूर्ण व दर्शनीय है। सं० १५७१ में भांडासाहद्वारा यह सुमतिनाथजी का मंदिर बनाया गया। तत्कालीन राव लूणकरणजी ने इसका नाम "त्रैलोक्य दीपक" रखा, जो सर्वथा उपयुक्त है। जोधपुर राज्य के सुप्रसिद्ध कलाधाम राणकपुर के त्रैलोक्य दीपक प्रसाद की यह अनुकृति है। मंदिर के परकोटे की लंबाई १७७ से १९० फुट तक है और चौड़ाई १०९॥ से १४४॥ फुट है। समतल भूमि से इसकी ऊंचाई ११२ फुट है। इसके तीसरे तल्ले पर से बीकानेर नगर के चारों ओर का परिदर्शन बड़ा ही सुंदर होता है। इसका शिखर तो करीब ६० कोस की दूरी से (दूरबीन से) देखा गया है। बाहर की भांति भीतर का दृश्य भी बड़ा ही सुंदर है। अनेकों स्तंभ व प्रदक्षिणा की जगती की कलापूर्ण विविध मूर्तियां बहुत ही मनोहर और दर्शनीय हैं। कुछ वर्षों पूर्व की गई चित्रकारी भी बड़ी सुंदर है। पास ही में सीमंधर स्वामी का स्वतंत्र मंदिर है। प्रत्येक बीकानेर आने वाले यात्री को इस मन्दिर को तो अवश्य देखना चाहिए।

५ नमिनाथजी का मंदिर

यह भांडासरजी के मंदिर के पीछे के श्री लक्ष्मीनाथ पार्क से संलग्न है। बच्छा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वत मत्री कर्मसिंह ने सं० १५७० में इसे बनाया और १५९३ में इसकी प्रतिष्ठा हुई। यह मंदिर भी बड़ा विशाल, सुंदर और कलापूर्ण है। सामने तथा दूसरी ओर की फाटक के पास बगीचा होने से इसकी सुंदरता और भी बढ़ गई है। मूल मंदिर के बाहर की जैसलमेर के पत्थर की कोरणी और भीतरी प्रवेश द्वार आदि की बहुत बारीक और सुंदर कोरणी दर्शनीय है।

६ पार्श्वनाथजी-नाहटों की बगेची

मांडासरजी के पास की नई सड़क व हमालों की बारी से गंगाशहर जाती हुई सड़क पर नाहटों की बगेची है। इसमें पार्श्वनाथ भगवान का मन्दिर और दादा गुरु कुशलसूरिजी के मकराने की बंगली में चरण हैं। इसके सामने बीकानेर के स्थापक राव बीकाजी का स्मारक है।

७ महावीरस्वामी का मंदिर (वैदों का)

(आचारजों के चौक के पास)

चिन्तामणिजी के मंदिर के बाद बना हुआ यह १४ गवाड़ पंचायती जैन मंदिर है। सं० १५७८ में इसकी नींव डाली गई। वैद गोत्र वालों ने इसे बनाया इसलिये वैदों के महावीरजी के नाम से प्रसिद्ध है। इसकी लेप्यमय मूलनायक सपरिकर प्रतिमा सुंदर है। सामने की ओर दो देहरियाँ हैं और पीछे की तीन देहरियां हैं जिनमें से प्रथम में सहस्रफणा पार्श्वनाथजी की मूर्ति दर्शनीय है। मध्यवर्ती देहरी में गिरनार तीर्थ पट्ट और नेमि पंच कल्याणक पट्ट संगमरमर के है। इस मंदिर के सामने वाली एक देहरी के भूमिगृह में ७५ धातु प्रतिमाएं सुरक्षित हैं। सामने की दूसरी देहरी में धातु की सबसे बड़ी चतुर्विंशति मूर्ति है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

८ संखेश्वर पार्श्वनाथ का मंदिर

यह निम्नोक्त महावीरजी मंदिर और पायचंद गच्छ के उपाश्रय के बीच आसाणियों के चौक में है।

९ महावीरजी का मंदिर (आसाणियों के चौक में)

उपरोक्त संखेश्वर पार्श्वनाथ मंदिर से संलग्न है। इसमें कुछ भित्ति चित्र अच्छे हैं।

१० पद्मप्रभुजी का मंदिर

यह आसाणियों के चौक के पास राव गोपालसिंहजी वैद की हवेली के पास की गली में पन्नीबाई के उपाश्रय से संलग्न है। यहां कुछ पुराने भित्ति चित्र हैं।

११ ऋषभदेवजी का मन्दिर

यह बाजार और रांगड़ी चौक की निकटवर्ती नाहटों की गवाड़ में है। इसकी मूलनायक आदिनाथ प्रतिमा बहुत ही विशाल और सुन्दर है। ऐसी प्रतिमा अन्यत्र दुर्लभ है। सं० १६६२ चैत्र बदी ७ को अकबर प्रतिबोधक युगप्रधान जिनचन्द्र सूरिजी ने इसकी प्रतिष्ठा की। यह शत्रुंजय तीर्थावतार माना जाता है। मूल गुंभारे के बाहर आले में युगप्रधान जिनचन्द्रसूरिजी की मूर्ति बड़ी सुन्दर है। मूलनायक प्रतिमा के सामने हाथी पर मरुदेवी माता और भरत चक्रवर्ती बैठे हैं और मूलगुंभारे के बाहर दोनों ओर भरत और बाहुबलि की कायोत्सर्ग स्थित प्रतिमाएँ हैं। यु० जिनचंद्रसूरिजी की मूर्ति के सामने के आले में गणधर गौतम व उसके साथ दोनों ओर गणधर सुधर्मा और जम्बूस्वामी की खड़ी मूर्तियां है। गर्भगृह के बाहर दीवाल में एक ओर ऋषभदेव का निर्वाणधाम अष्टापद और दूसरी ओर शत्रुंजय तीर्थ चित्रित

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

है। पास में पार्श्वनाथजी का स्वतंत्र मन्दिर और प्रदक्षिणा में पांच पांडव, कुन्ती, द्रौपदी, और ऋषभदेव चरण की देहरी है।

१२ शांतिनाथजी का मन्दिर

यह भी नाहटों की गवाड़ में खरतरगच्छ की आचार्य शाखा के उपाश्रय के ठीक सामने है। इसमें शान्तिनाथजी, गौतम स्वामी आदि की मूर्तियां दर्शनीय हैं।

इसके सामने खरतर आचार्य शाखा के उपाश्रय में देवछन्दे में जैनमूर्तियां हैं।

१३ सुपार्श्वनाथजी का मन्दिर

यह शान्तिनाथजी के मन्दिर के पास, एक पोल में लक्ष्मीबाई के उपाश्रय से संलग्न है। इसमें तीर्थों के चित्रित पट्ट और ऊपर तल्ले में चौमुख समवसरण देहरी और अन्य मूर्तियां दर्शनीय हैं।

१४ महावीरजी का मन्दिर (बोरों की सेरी)

यह नाहटों और गोलछों की गवाड़ के मध्यवर्ती बोरों की सेरी (सकड़ी गली) में उपाश्रय के सामने है। यह मन्दिर सबसे पीछे बना होने पर भी विशेष रूप से दर्शनीय है। इस संगमरमर के शिखरबन्ध कलापूर्ण जिनालय का स्वर्गीय सेठ भैरोंदानजी कोठारी ने सं० २००२ में बनाया है। इसके भित्ति चित्र बीकानेर की चित्रशैली के बड़े सुन्दर हैं। जिनमें भगवान महावीर के २७ भव, श्रीपाल चरित्र पृथ्वीचन्द्र गुणसागर चरित्र आदि कई जैन कथानकों का सुन्दर चित्रण है। सामने के आलों में गौतम स्वामी और जिनकुशलसूरि की मूर्तियां और ऊपर तल्ले में वासुपूज्य भगवान की एक देहरी है।

१५ कुंथुनाथजी का मंदिर

यह रांगड़ी चौक में बड़े उपाश्रय के ठीक सामने बड़े मौके की जगह पर है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१६ अजितनाथजी का मंदिर

कुंथुनाथजी के मंदिर के थोड़े आगे सुगनजी के उपाश्रय के पीछे के हिस्से में ऊपर तल्ले में यह देहरासर रूप मंदिर है। पास में जिनकुशलसूरिजी का गुरु मंदिर जिसमें दादा गुरू की जीवनी के चित्र हैं और नीचे बंगलो में उपाध्याय क्षमाकल्याणजी की सुन्दर मूर्ति है।

१७ अजितनाथजी का मंदिर

कोचरों के मोहल्ले में सिरोहियों के घरों के पास में पांच मंदिर हैं। जिनमें अजितनाथजी का शिखरबद्ध मंदिर सब से प्राचीन है। इसका निर्माण सं० १६६४ के आस पास हुआ है। सं० १६६४ की प्रतिष्ठित हीरविजयसूरिजी की मूर्ति भी इसमें सुन्दर है। सं० १८५५–७४ और १९९६ में इसका जीर्णोद्धार होता रहा।

१८ विमलनाथजी का मंदिर

यह अजितनाथजी के मंदिर के पास ही है। सं० १९२४ में कोचर अमीचंद हजारीमल ने इसकी प्रतिष्ठा करवाई।

१९ पारसनाथजी का मंदिर

यह विमलनाथजी के मंदिर के पास ही है। सं० १८८१ में यह मंदिर बनाया गया।

२० आदिनाथजी का मंदिर

यह उपरोक्त मंदिर से संलग्न है। मूलनायकजी सं० १८९३ में प्रतिष्ठित हैं। इसमें दोनों ओर दीवालों में चित्रित तीर्थपट्ट बड़े सुंदर हैं।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

२१ शान्तिनाथजी का मंदिर

यह उपरोक्त आदिनाथजी के मंदिर के पास, कोचरों के उपाश्रय में देरासर के रूप में है।

कोचरों की गुवाड़ के पीछे जेल रोड़ पर दिगबर जैन धर्मशाला और नसियांजी है।

२२ पायचंदसूरिजी का मंदिर—आदिनाथ मंदिर गंगाशहर रोड

यह गंगाशहर रोड पर है। कोचरों की गवाड़ से बीदासर की बारी से निकल कर इस मंदिर को जाने का मार्ग है। यह बहुत विशाल जगह को घेरे हुए है। यहाँसब से पहले सं० १६६२ में पार्श्वचंद्रसूरि के चरण स्थापित हुए इसीलिए इस नामसे प्रसिद्ध है। फिर इसी गच्छ के अन्य आचार्यों की शालाएं व पादुकाएं बनी। आदिनाथ भगवान् का शिखरबंध मंदिर पीछे बना है।

काती सुदी १५ को बैंदों के महावीरजी से भगवान की सवारी निकल कर यहां आती है और मिगसर बदी २ को लौटती है।

२३ रामलालजी की दादावाड़ी

उपर्युक्त मन्दिर के सामने महोपाध्याय वैद्यवर रामलालजी व गुरुदेव का मन्दिर है।

२४ दूगड़ों की दादाबाड़ी

इसी गंगाशहर रोड़ पर थोड़ा आगे जाने पर दूगड़ों की बगीची में दादाबाड़ी है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

२५ पार्श्वनाथजी का मन्दिर

इसी रोड़ पर थोड़े आगे कोचरों की बगेची है जिसमें हाल ही में सामने की ओर गुरू मूर्तियां और उनके पीछे पार्श्वनाथ भगवान का मन्दिर बनाया गया है।

२६ गौडी पार्श्वनाथजी का मन्दिर

गंगाशहर रोड़ के मध्यवर्ती घूमचक्कर के पास विशाल भूमि को लिये हुए यह मन्दिर है। सं० १८८६ में इस गौडीपार्श्व मंदिर का उद्धार हुआ। पास ही में समेतशिखरजी का संगमरमर का विशाल पट्ट सेठिया अमीचन्द ने सं० १८८६ में बनाया। दीवाल में दोनों ओर जिनहर्षसूरि और मस्तयोगी ज्ञानसारजी (सामने सेठिया अमीचन्द बैठे हैं) के ऐतिहासिक चित्र हैं। बाहर एक गुरु पादुका मन्दिर में खरतरगच्छ की यह परंपरा के ७० चरण हैं। और पास ही आदिनाथजी का मन्दिर है।

२७ संखेश्वर पार्श्वनाथ (सेढूजी का) मन्दिर

यह श्री गौडी पार्श्वनाथजी के संलग्न व इसी अहाते में है। सं० १९२४ में यति श्री सेढूजी (समुद्रसोम) ने इसे बनवाया था। इसके पास ही मस्तयोगी ज्ञानसारजी का समाधि मन्दिर है। नरायणजी के नाम से प्रसिद्ध ये बहुत बड़े आध्यात्मिक योगी, राज्यमान्य, काव्यमर्मज्ञ और प्रभावक पुरुष थे। ९८ वर्ष की उम्र में यहां इनका स्वर्गवास सं० १९९८ में हुआ। सं० १९०२ में इस साल में उनके चरण प्रतिष्ठित हुए।

इसके पीछे ही गंगाशहर रोड पर जैन कालेज है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बीकानेर के अन्य दर्शनीय स्थान

बीकानेर में जैन मन्दिरों के अतिरिक्त निम्नोक्त दर्शनीय स्थान हैं—

१ नाहटा कला भवन–अभय जैन ग्रंथालय

नाहटों की गवाड़ में ऋषभदेवजी के मन्दिर के ठीक सामने उपरोक्त दर्शनीय स्थान है। इसमें बीस हजार प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ, पच्चीस हजार मुद्रित ग्रन्थ, विविध चित्र–शैलियों के हजारों चित्र, पुरातत्व, कला की नानाविध सामग्री का विशद संग्रह है। राजस्थान का यह सबसे बड़ा निजी ग्रन्थालय व संग्रहालय है।

२ बड़ा उपाश्रय

इसमें दस हजार हस्तलिखित ग्रन्थों का बड़ा ज्ञान भण्डार और खरतरगच्छ के बड़े श्री पूज्यजी की गादी है।

३ श्री भैरूंदानजी कोठारी का निवास भवन

कोठारियों के मोहल्ले में यह भवन कला की दृष्टि से अपनी निराली विशेषता

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

रखता है। इसमें संगमरमर पत्थर की बारीक कोरणी और रणघम्भोर युद्ध आदि के विशिष्ट चित्र और अनेक दर्शनीय सामग्री है।

४ गगा गोल्डन जुबिली संग्रहालय (म्युजियम)

सुप्रसिद्ध पबलिक पार्क के बाहर सामने के अद्यतननिर्मित गोल भवन में राज्य का सार्वजनिक पुस्तकालय और संग्रहालय है। इस सग्रहालय में पल्लू से प्राप्त विश्वविश्रुत् जैन सरस्वती की मूर्ति विशेष रूप से दशनीय है। मटनेर से प्राप्त कई जैन मूर्तियां भी इस म्युजियम में है।

५ मोतीचंदजी खजांची संग्रह

महात्मा गांधी रोड़ पर रत्नबिहारीजी के ठीक सामने खजांची बिल्डिंग में मोतीचन्दजी खजांची का प्राचीन कलापूर्ण चित्रों व हस्तलिखित ग्रन्थो का विशिष्ट संग्रह है।

इनके अतिरिक्त हस्तलिखित ग्रन्थ संग्रहों में आचार्य शाखा, जयचन्दजी, क्षमाकल्याणजी, सेठिया लाइब्रेरी, कुशलचन्द्रसूरि पुस्तकालय गोविन्द, पुस्तकालय, महावीर जैन लाइब्रेरी और महाराजा की अनूप संस्कृत लाइब्रेरी (लालगढ़) विशेष रूप से उल्लेखनीय है। बीकानेर में करीब साठ-सत्तर हजार हस्तलिखित प्रतियों का विशिष्ट संग्रह है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बीकानेर के निकटवर्ती दर्शनीय स्थान

१ रेल दादाजी

बीकानेर के निकटवर्ती दर्शनीय स्थानों में गंगाशहर रोड पर रेल दादाजी के नाम से प्रसिद्ध दादावाड़ी में जिनदत्तसूरिजी की मूर्ति, जिनकुशलसूरिजी, युगप्रधान जिनचंद्रसूरिजी आदि के चरण और अनेक साधु साध्वियां, श्री पूज्यजी और यतियों के स्मारक बने हुए हैं। पास ही एक अलग देहरी में खरतर गच्छ की आचार्य शाखा के श्रीपूज्यजी के चरण और मुख्य द्वार के पास गौत्तम स्वामी की देहरी है।

२ रामनिवास-पार्श्वनाथ मंदिर

यह रेल दादाजी से आगे गंगाशहर-प्रवेश के घूम चक्र के बीच में है। यहां पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा बांठिया रामचंद ने स्थापित की।

३ आदिनाथ मंदिर—गंगाशहर

यह गंगाशहर में सड़क के ऊपर ही बना हुआ है।

४ पार्श्वनाथ मंदिर—भीनासर

गंगाशहर की रोड पर सीधे चलते हुए भीनासर के अंतिम सीमावर्ती कूए

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और मुस्लीमनोहर के मंदिर के सामने ही यह मंदिर है। यहां की मूलनायक पार्श्व-नाथ प्रतिमा सं० ११७१ में जिनदत्तसूरि प्रतिष्ठित सुंदर और सप्रभाव है।

५ पार्श्वनाथ मंदिर– महावीर सेनेटोरियम

बीनासर और उदरामसर के मध्यवर्ती धोरा पर अवस्थित भैरूँदत्तजी आसोपा द्वारा स्थापित महावीर सेनेटोरियम में यह मंदिर है।

६ कुंथुनाथ देरासर–उदरामसर

बीकानेर से ७ मील दूरवर्ती उदरामसर के बोयरों के वास में उपाश्रय के ऊपर तल्ले में यह मंदिर है।

७ जिनदत्तसूरि दादावाड़ी–उदरामसर

यह उदरामसर गांव से लगभग १ मील पर है। जिनदत्तसूरिजी की चरण पादुकाएँ सं० १७३५ में बनाई गई। इस दादावाड़ी का जीर्णोद्धार सं० १८८३ में हुआ। सं० १८८४ से प्रति वर्ष भादौं सुदी १५ को यहाँ मेला भरता है। दादा गुरू जिनदत्तसूरिजी के चरण बड़े चमत्कारी हैं।

८ पार्श्वनाथ मन्दिर–शिवबाड़ी

बीकानेर से पूर्व–उत्तर दिशा में चार मील दूर शिवबाड़ी ग्राम है। यहां पार्श्वनाथजी का मंदिर लालेश्वर महादेवजी के मंदिर के सामने सं० १९३८ में यति सुगनजी के उपदेश से महाराजा डूंगरसिंहजी ने बनवाया। सावण सुदी १० को यहां एक बड़ा मेला भरता है। पास के बगीचे में एक बड़ा तालाब है और लालेश्वर महादेव के मंदिर में एक बावड़ी है। वर्षा होने पर यहां बड़ी रौनक रहती है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

९ सुपार्श्वनाथ मन्दिर–ऊदासर

यह बीकानेर से ६ मील दूर है। सं० १९३५ में सदारामजी गोलछा ने इस मंदिर को बनवाया।

१० जिनकुशलसूरि गुरु मंदिर–नाल

यह बीकानेर से दक्षिण–पश्चिम ८ मील दूर गजनेर कोलायत जाने वाली सड़क पर है। यहां कुशलसूरिजी की पादुकाएँ बच्छावत कर्मसिंह ने सं० १५८० के आसपास, गुरु दर्शन पाने के अनन्तर स्थापित की। यह बहुत चमत्कारी स्थान माना जाता है। इस गुरु मंदिर का जीर्णोद्धार सं० १९९६ में भैरूँदानजी कोठारी ने बड़े ही सुन्दर रूप से करवाया है। गुरु चरण के ऊपर की बंगली की संगमरमर की जाली और कोरणी बहुत ही भव्य है। पास के एक चौमुख स्तूप में महाकवि समय सुन्दरजी और उनके गुरु के चरण हैं। बाहर जिनचारित्रसूरिजी स्मृति मंदिर अभी दीपचंदजी गोलछा ने बनाया है, जिसमें जिनचारित्रसूरिजी की मूर्ति है। सामने की शालाओं में कीर्तिरत्नसूरि शाखा वालों के चरण व स्तूप हैं। खरतर आचार्य शाखा की कोटड़ी में उनके श्रीपूज्य आदि के चरण हैं। कार्ती सुदी १५ को यहां मेला लगता है और फागुन वदी ३० को पूजा, रात्रि जागरण आदि द्वारा गुरु भक्ति की जाती है।

११ पद्मप्रभुजी का मंदिर–नाल

यह इस गुरु मन्दिर के अहाते ही में किनारे पर है। सं० १९१६ में इसकी प्रतिष्ठा हुई।

१२ मुनिसुव्रतजी का मंदिर–नाल

यह गुरु मंदिर के परकोटे से बाहर है। मूलनायक सं० १९०८ में प्रतिष्ठित है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ठहरने के स्थानों व यातायात संबंधी सूचनाएं

(१) दर्शनार्थ जाने का क्रम—कंदोईयों के बाजार से वासुपूज्य मंदिर की गली से सीधी सड़क भांडासरजी वहां से लौटती हुई सीधी सड़क से सुराणों की गुवाड़ होकर आचार्यों का चौक। बांठियों, आसाणियों की गली होकर नाहटों की गवाड़ फिर बोरों की सेरी होकर रांगड़ी से कोचरों की गवाड़, वहां से बीदासर बारी होकर गंगाशहर रोड़, फिर गोगादरवाजा से बेगाणियां और कोठारियों की गवाड़ होकर रांगड़ी चौक में।

(२) बीकानेर स्टेशन के सामने धर्मशाला मोहतों की है। यहां सर्व साधारण ठहर सकते हैं।

(३) रांगड़ी के चौक में भी एक साधर्मी शाला है जहां साधर्मी भाईयों के ठहरने का स्थान है। स्टेशन से तांगा, इक्का की सवारी सब जगह के लिए तैयार मिलती है।

(४) पार्श्वचंद्रसूरिजी, रामलालजी की दादावाड़ी, डूगड़ों की दादावाड़ी, कोचरों की बगेची, रेल दादाजी व नाहटों की बगेची में भी थोड़े यात्रियों के लिए ठहरने का स्थान है।

(५) बीकानेर शहर के अलावा ये आस पास की यात्रा बीकानेर पंच तीर्थी कहलाती है।

(६) नाल के लिए बीकानेर रेलवे स्टेशन से लोरी जाती आती है। घोड़ा गाड़ी (तांगा इक्का) भी जाता है। बीकानेर स्टेशन से नाल को रेलगाड़ी भी जाती आती है पर स्टेशन से कुछ दूर रहता है इसलिए लोरी या तांगे में सुविधा रहती है।

(७) उदरामसर गाँव के जाने आने के लिए भी रेलवे स्टेशन पर लोरियां खड़ी रहती हैं।

—————

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बीकानेर राज्य के जैन मंदिर

बीकानेर के निकटवर्ती जैन मन्दिरों का परिचय देने के बाद राज्य के जैन मन्दिरों वाले ग्राम, नगरों की सूची दी जारही है—

१ बीकानेर दिल्ली रेल्वे लाइन पर

(१) नापासर—शान्तिनाथ मन्दिर (२) डूँगरगढ़—पार्श्वनाथ मंदिर (३) बिगा—शान्तिनाथ मन्दिर (४) राजलदेसर—आदिनाथ मन्दिर (५) रतनगढ़—आदिनाथ मंदिर और दादाबाड़ी (६) लापर स्टेशन से बीदासर बस सर्विस है-यहां च दादप्रभु देरासर है (७) सुजानगढ़ में पार्श्वनाथ, आदिनाथ मन्दिर द्वय और दो दादाबाड़ियां हैं (८) रतनगढ़ से सरदारशहर रेल जाती है, वहां दो पारसनाथ मन्दिर और दादावाड़ी है (९) चूरू में शान्तिनाथ मन्दिर और दादाबाड़ी है। (१०) राजगढ़ में सुपार्श्वनाथ मन्दिर (११) रिणी (तारानगर) राजगढ़ से बस सर्विस है यहां शीतलनाथजी का बीकानेर राज्य में सबसे पुराना सं० ९९९ का मन्दिर और एक दादाबाड़ी है (१२) नोहर—राजगढ़ से हनुमानगढ़ जाने वाली रेल्वे लाइन में नोहर स्टेशन है। यहां पारसनाथजी का मन्दिर है और इसमें एक शिलापट्ट पर सं० १०८४ का शिला लेख है (१) भादरा—नोहर से २५ मील दूर रेल्वे स्टेशन है। यहां पार्श्वनाथ और महावीर स्वामी की प्रतिमाएँ हैं।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

२ बीकानेर से भटिंडा लाइन पर

(१) लूणकरनसर–सुपार्श्वनाथजी का मन्दिर और दादा गुरुचरण हैं। (२) कालू–लूणकरणसर, १२ मील से बस सर्विस है। यहां चन्दाप्रभुजी का मन्दिर और दादा गुरुचरण हैं। ३) गारबदेसर–कालू से कुछ दूर–इस गांव में मुरलीमनोहरजी के मन्दिर में एक जैन प्रतिमा है। (४) महाजन–चन्दाप्रभुजी का मन्दिर और गुरु चरण हैं। (५) सूरतगढ़–पार्श्वनाथजी का मन्दिर। (६) हनूमानगढ़–यहां किल्ले में मुनि सुव्रतस्वामी का मन्दिर है।

३ बीकानेर नागोर रेल्वे लाइन पर

(१) देशनोक–स्टेशन के पास दादाबाड़ी और भूरों और आंचलियों के बास में शान्तिनाथजी और संभवनाथजी एवं लोंका उपाश्रय में केसरियानाथजी का मंदिर है। (२) नोखामंडी–पार्श्वनाथजी का मन्दिर है। (३) पांचू–देशनोक से २० मील, यहा पार्श्वनाथजी का मन्दिर है।

४ बीकानेर कोलायत रेल्वे लाइन पर

(१) कोलायत से छः मील दूर झज्जू में बेगाणी और सेठियों के बास में नेमीनाथजी के दो मन्दिर हैं।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अभय जैन ग्रन्थमाला के महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

१. अभयरत्नसार (अप्राप्य)
२. पूजा संग्रह (अप्राप्य)
३. सती मृगावती ।=)
४. विधवा कर्त्तव्य ।=)
५. स्नात्र पूजादि संग्रह (अप्राप्य)
६. जिनराजभक्ति आदर्श (अप्राप्य)
७. युगप्रधान जिनचंद्रसूरि (अप्राप्य)
८. ऐति. जैनकाव्यसंग्रह ५।) प्रचारार्थ २॥)
९. संघपति सोमजी शाह =)
१०. दादा जिनकुशलसूरि, अप्राप्य
११. मणिधारी जिनचंद्रसूरि (अप्राप्य)
१२. युगप्रधान श्री जिनदत्तसूरि १)

शीघ्र प्रकाशित होनेवाले ग्रन्थ

१३. बीकानेर जैन लेख संग्रह, सचित्र सजिल्द वृहद्ग्रन्थ मूल्य १०)
१४. ज्ञानसार ग्रन्थावली पृ० सं० ४०० सचित्र सजिल्द मूल्य ३॥)
१५. समयसुंदर कृति कुसुमांजलि सजिल्द पृ० ८०० मूल्य ५)

श्री महेवचंद्र ग्रन्थमाला

१. चौबीसी बीसी (जीवनी सहित) प्रचारार्थ मूल्य ।)

राजस्थानी साहित्य परिषद् के प्रकाशन

१. राजस्थानी, भाग १–२ मूल्य २॥।) ३)
२. राजस्थानी कहावतें भाग १–२ मूल्य ३) ३)

प्राप्ति स्थान —

१. नाहटा ब्रदर्स, ४ जगमोहन मल्लिक लेन, कलकत्ता–७
२. दानमल शंकरदान नाहटा, नाहटा गलाड़, बीकानेर

भारतीय मुद्रण मन्दिर, बीकानेर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com